ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी(काव्य-खंड)

दिनांक—24/04/2021 साखियाँ-कबीरदास

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी ई आर टी पर आधारित

साखियाँ

-कबीरदास

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।3।

भावार्थ : कवि ज्ञान प्राप्ति में लगे साधकों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम ज्ञानरूपी हाथी पर सहज समाधि रूपी आसन (कालीन) बिछाकर अपने मार्ग पर निश्चिंततापूर्वक चलते रहो। यह संसार कुत्ते के समान है जो हाथी को चलते देखकर निरुद्देश्य भौंकता रहता है। अर्थात् साधक को ज्ञान प्राप्ति में लीन देखकर दुनियावाले अनेक तरह की
~~~~~~~~~~

उल्टी-सीधी बातें करते हैं परंतु उसे दुनिया के लोगों की निंदा की परवाह नहीं करनी चाहिए।

शब्दार्थ : **हस्ती**-हाथी। **सहज**-प्राकृतिक समाधि । **दुलीचा**-कालीन। **स्वान**-कुत्ता। **भूँकन दे**-भौंकने दो। **झख मारि** –समय बरबाद करना।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।

निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान। 4।

भावार्थ : लोग अपने धर्म, संप्रदाय (पक्ष) को दूसरों से बेहतर मानते हैं। वे अपने पक्ष का समर्थन तथा दूसरे की निंदा करते हैं। इसी पक्ष-विपक्ष के चक्कर में पड़कर वे अपना वास्तविक उद्देश्य भूल जाते हैं। जो धर्म-संप्रदाय के चक्कर में पड़े बिना ईश्वर की भक्ति करते हैं वही सच्चे ज्ञानी हैं।

भावार्थ : लोग अपने धर्म, संप्रदाय (पक्ष) को दूसरों से बेहतर मानते हैं। वे अपने पक्ष का समर्थन तथा दूसरे की निंदा करते हैं। इसी पक्ष-विपक्ष के चक्कर में पड़कर वे अपना वास्तविक उद्देश्य भूल जाते हैं। जो धर्म-संप्रदाय के चक्कर में पड़े बिना ईश्वर की भक्ति करते हैं वही सच्चे ज्ञानी हैं।

धन्यवाद